

इस्राईली क़ौम रेगिस्तान में



isrāīlī qaum registān meñ
The Israelites in the Desert

(Urdu—Hindi script)

© 2022 Chashma Media.
published and printed by
Good Word Communication Services Pvt. Ltd.
New Delhi, INDIA

Bible text is from UGV.
illus.: R. Gunther (www.lambsongs.co.nz), S. Bentley
(www.freebibleimages.org)

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

इसराईलियों ने अपने खुदा से कितने मोजिजे देखे थे। बार बार खुदा ने उनसे वादा किया था कि वह उन्हें मिसर की गुलामी से छोड़ाएगा। अब उसका वादा पूरा हो चुका था। आइए हम पढ़ें कि तौरैत शरीफ़ में क्या लिखा है :

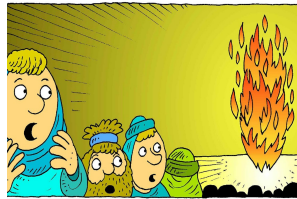
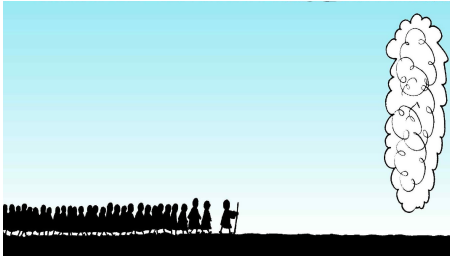


मिसर से निकलने का रास्ता

फिर मूसा ने लोगों से कहा, “इस दिन को याद रखो जब तुम रब की अज़ीम कुदरत के बाइस मिसर की गुलामी से निकले।”

जब फिरौन ने इसराईली क्रौम को जाने दिया तो अल्लाह उन्हें फ़िलिस्तियों के इलाक़े में से गुज़रनेवाले रास्ते से लेकर न गया, अगरचे उस पर चलते हुए वह जल्द ही मुल्के-कनान पहुँच जाते। बल्कि रब ने कहा, “अगर उस रास्ते पर चलेंगे तो उन्हें दूसरों से लड़ना पड़ेगा। ऐसा

न हो कि वह इस वजह से अपना इरादा बदलकर मिसर लौट जाएँ।” इसलिए अल्लाह उन्हें दूसरे रास्ते से लेकर गया, और वह रेगिस्तान के रास्ते से बहरे-कुलजुम की तरफ बढ़े। मिसर से निकलते वक़्त मर्द मुसल्लह थे।



रब उनके आगे आगे चलता गया, दिन के वक़्त बादल के सतून में ताकि उन्हें रास्ते का पता लगे और रात के वक़्त आग के सतून में ताकि उन्हें रौशनी मिले। यों वह दिन और रात सफ़र कर सकते थे। दिन के वक़्त बादल का सतून और रात के वक़्त आग का सतून उनके सामने रहा। वह कभी भी अपनी जगह से न हटा।

2 / मिसर से निकलने का रास्ता



तब रब ने मूसा से कहा, “इसराईलियों को कह देना कि वह पीछे मुड़कर मिजदाल और समुंदर के बीच यानी फ़्री-हख़ीरोत के नज़दीक रुक जाएँ। वह बाल-सफ़ोन के मुक्राबिल साहिल पर अपने ख़ैमे लगाएँ। यह देखकर फ़िरौन समझेगा कि इसराईली रास्ता भूलकर आवारा फिर रहे हैं और कि रेगिस्तान ने चारों तरफ़ उन्हें घेर रखा है। [...] लेकिन मैं फ़िरौन और उसकी पूरी फ़ौज पर अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा। मिसरी जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

इसराईलियों ने ऐसा ही किया।

जब मिसर के बादशाह को इत्तला दी गई कि इसराईली हिजरत कर गए हैं तो उसने और उसके दरबारियों ने अपना ख़याल बदलकर कहा, “हमने क्या किया है? हमने उन्हें जाने दिया है, और अब हम उनकी ख़िदमत से महरूम हो गए हैं।” चुनाँचे बादशाह ने अपना जंगी रथ तैयार

करवाया और अपनी फ़ौज को लेकर निकला। वह 600 बेहतरीन क्रिस्म के रथ और मिसर के बाक़ी तमाम रथों को साथ ले गया। तमाम रथों पर अफ़सरान मुकर्रर थे।



जब इसराईलियों ने फ़िरौन और उसकी फ़ौज को अपनी तरफ़ बढ़ते देखा तो वह सख़्त घबरा गए और मदद के लिए रब के सामने चीख़ने-चिल्लाने लगे। उन्होंने मूसा से कहा, “क्या मिसर में क़ब्रों की कमी थी कि आप हमें रेगिस्तान में ले आए हैं? हमें मिसर से निकालकर आपने हमारे साथ क्या किया है? क्या हमने मिसर में आपसे दरखास्त नहीं की थी कि मेहरबानी करके हमें छोड़ दें, हमें मिसरियों की ख़िदमत करने दें? यहाँ आकर रेगिस्तान में मर जाने की निसबत बेहतर होता कि हम मिसरियों के गुलाम रहते।”

लेकिन मूसा ने जवाब दिया, “मत घबराओ। आराम से खड़े रहो और देखो कि रब तुम्हें आज किस तरह बचाएगा। रब तुम्हारे लिए लड़ेगा। तुम्हें बस, चुप रहना है।”



फिर रब ने मूसा से कहा, “तू मेरे सामने क्यों चीख रहा है? इसराईलियों को आगे बढ़ने का हुक्म दे। अपनी लाठी को पकड़कर उसे समुंदर के ऊपर उठा तो वह दो हिस्सों में बट जाएगा। इसराईली खुशक ज़मीन पर समुंदर में से गुज़रेंगे।

अल्लाह का फ़रिश्ता इसराईली लशकर के आगे आगे चल रहा था। अब वह वहाँ से हटकर उनके पीछे खड़ा हो गया। बादल का सतून भी लोगों के आगे से हटकर उनके पीछे जा खड़ा हुआ। इस तरह बादल मिसरियों और इसराईलियों के लशकरों के दरमियान आ गया। पूरी रात मिसरियों की तरफ़ अंधेरा ही अंधेरा था जबकि इसराईलियों की

तरफ़ रौशनी थी। इसलिए मिसरी पूरी रात के दौरान इसराईलियों के करीब न आ सके।

मूसा ने अपना हाथ समुंदर के ऊपर उठाया तो रब ने मशरिक़ से तेज़ आँधी चलाई। आँधी तमाम रात चलती रही।



उसने समुंदर को पीछे हटाकर उसकी तह ख़ुशक कर दी। समुंदर दो हिस्सों में बट गया तो इसराईली समुंदर में से ख़ुशक ज़मीन पर चलते हुए गुज़र गए। उनके दाईं और बाईं तरफ़ पानी दीवार की तरह खड़ा रहा।

जब मिसरियों को पता चला तो फ़िरौन के तमाम घोड़े, रथ और घुड़सवार भी उनके पीछे पीछे समुंदर में चले गए। सुबह-सवेरे ही रब ने बादल और आग के सतून से मिसर की फ़ौज पर निगाह की और उसमें अबतरी पैदा कर दी। उनके रथों के पहिये निकल गए तो उन पर क़ाबू



पाना मुश्किल हो गया। मिसरियों ने कहा, “आओ, हम इसराईलियों से भाग जाएँ, क्योंकि रब उनके साथ है। वही मिसर का मुक़ाबला कर रहा है।”



तब रब ने मूसा से कहा, “अपना हाथ समुंदर के ऊपर उठा। फिर पानी वापस आकर मिसरियों, उनके रथों और घुड़सवारों को डुबो देगा।”

मूसा ने अपना हाथ समुंदर के ऊपर उठाया तो दिन निकलते वक़्त पानी मामूल के मुताबिक़ बहने लगा, और जिस तरफ़ मिसरी भाग रहे थे वहाँ पानी ही पानी था। यों रब ने उन्हें समुंदर में बहाकर ग़रक़ कर दिया। पानी वापस आ गया। उसने रथों और घुड़सवारों को ढाँक लिया। फ़िरौन की पूरी फ़ौज़ जो इसराईलियों का ताक़्क़ुब कर रही थी डूबकर तबाह हो गई। उनमें से एक भी न बचा।

लेकिन इसराईली ख़ुशक ज़मीन पर समुंदर में से गुज़रे। उनके दाईं और बाईं तरफ़ पानी दीवार की तरह खड़ा रहा।



उस दिन रब ने इसराईलियों को मिसरियों से बचाया। [...] जब इसराईलियों ने रब की यह अज़ीम कुदरत देखी जो उसने मिसरियों पर ज़ाहिर की थी तो रब का ख़ौफ़ उन पर छा गया। वह उस पर और उसके ख़ादिम मूसा पर एतमाद करने लगे।

मूसा का गीत

तब मूसा और इसराईलियों ने रब के लिए यह गीत गाया,

“मैं रब की तमजीद में गीत गाऊँगा,
क्योंकि वह निहायत अज़ीम है।
रब मेरी कुव्वत और मेरा गीत है,
वह मेरी नजात बन गया है।
वही मेरा खुदा है, और मैं उसकी तारीफ़ करूँगा।
वही मेरे बाप का खुदा है, और मैं उसकी ताज़ीम करूँगा।
ऐ रब, कौन-सा माबूद तेरी मानिंद है?
कौन तेरी तरह जलाली और कुदूस है?
कौन तेरी तरह हैरतअंगेज़ काम करता
और अज़ीम मोजिज़े दिखाता है?
कोई भी नहीं।
अपनी शफ़क़त से तूने एवज़ाना देकर अपनी क़ौम को छुटकारा दिया
और उसकी राहनुमाई की है,
अपनी कुदरत से तूने उसे अपनी मुक़द्दस सुकूनतगाह तक
पहुँचाया है।
रब अबद तक बादशाह है!”



तब हारून की बहन मरियम जो नबिया थी ने दफ़ लिया, और बाक़ी तमाम औरतें भी दफ़ लेकर उसके पीछे हो लीं। सब गाने और नाचने लगीं।

मरियम ने यह गाकर उनकी राहनुमाई की, “रब की तमजीद में गीत गाओ, क्योंकि वह निहायत अज़ीम है। ”

सवाल

- इसराईलियों ने बार बार खुदा के अज़ीम काम देखे थे। अब जब वह मिसर से निकलने लगे तो क्या अल्लाह ने अपनी क्रौम को छोड़ दिया?
 - ▶ हरगिज़ नहीं! खुदा क़दम बक़दम उनके साथ चलता रहा।
- उसने किस तरह उनकी राहनुमाई की?
 - ▶ वह खुद उनके दरमियान रहा। दिन के वक़्त बादल के सतून में और रात के वक़्त आग के सतून में। साथ साथ अल्लाह हज़रत मूसा को फ़रमाता रहा कि उन्हें क्या करना है और किस तरह क्रौम की राहनुमाई करनी है। बिलकुल उसी तरह जिस तरह एक ज़बूर में लिखा है,

उसने अपनी राहें मूसा पर और अपने अज़ीम काम इसराईलियों पर ज़ाहिर किए। (ज़बूर 103:7)

- क्या हम भी खुदा की राहनुमाई का तजरिबा कर सकते हैं?
 - ▶ ज़रूर, जब हम उसकी क्रौम में शामिल हो जाते हैं। खुदा क्रौम से कहीं दूर नहीं रहता बल्कि वह अपनी क्रौम के दरमियान ही मौजूद रहता है। अल्लाह बेपरवा नहीं है। उसे फ़िकर है कि इसराईली किस राह पर चल रहे हैं। बिलकुल इसी तरह उसे बड़ी फ़िकर है कि हम किस राह पर चलते हैं। वह हमें अच्छी राह पर लाना चाहता है। यों ज़बूर में वह वादा करता है,

मैं तुझे तालीम दूँगा, तुझे वह राह दिखाऊँगा जिस पर तुझे जाना है। मैं तुझे मशवरा देकर तेरी देख-भाल करूँगा। (ज़बूर 32:8)

इसलिए हम हज़रत दाऊद के साथ दुआ कर सकते हैं,

अपनी सच्चाई के मुताबिक़ मेरी राहनुमाई कर, मुझे तालीम दे। क्योंकि तू मेरी नजात का ख़ुदा है।
(ज़बूर 25:4-5)

- लेकिन लगता है कि ख़ुदा से ग़लती हुई है, कि वह इसराईली क्रौम को ग़लत राह पर लाया है। क्योंकि चलते चलते उनको पता चलता है कि उनके सामने समुंदर है जबकि दुश्मन उनका पीछा कर रहा है। मिसरी फ़ौज पहुँचनेवाले हैं, और कोई सहारा नहीं। बचने का रास्ता कहीं दिखाई नहीं देता। इसराईलियों की मौत यक़ीनी लगती है। अगर हमारे साथ ऐसा होता तो हम क्या करते? क्या हम मुतमइन रहते या परेशान हो जाते?
 - ▶ बेशक हम डर के मारे पिघलने लगते।
- इसराईलियों ने क्या महसूस किया?
 - ▶ वह भी सख़्त डर गए।

- यह खतरा देखकर उन्होंने क्या किया?
 - ▶ वह गालियाँ कसने लगे। हज़रत मूसा को बुरा-भला कहने लगे। कहने लगे कि तूने हमें इस फंदे में क्यों फँसाया?
- हज़रत मूसा ने जवाब में क्या किया?
 - ▶ इसका सिर्फ़ एक सही जवाब था और वह था खुदा से इल्तिजा।
- क्यों?
 - ▶ अल्लाह ने तो वादा किया था कि वह इसराईली क्रौम को मिसर के जुल्मो-सितम से बचाएगा। बेशक हज़रत मूसा को भी सख्त डर और परेशानी थी। मगर उन्होंने अपनी परेशानी अपने खुदा के सामने रखकर क्रौम की हौसलाअफ़ज़ाई की कि वह खुदा पर भरोसा रखे,

“मत घबराओ। आराम से खड़े रहो और देखो कि रब तुम्हें आज किस तरह बचाएगा। रब तुम्हारे लिए लड़ेगा। तुम्हें बस, चुप रहना है।”
(खुर्रूज 15:13-14)

तब खुदा ने नजात का अपना मनसूबा उन पर ज़ाहिर करके उन्हें समुंदर में से गुज़रने दिया।

● क्रौम ने क्या जवाब दिया?

- ▶ लोग नजात के इस मनसूबे पर एतमाद करके समुंदर में से गुज़र गए। उन्होंने अल्लाह के कलाम पर भरोसा किया। उनका ईमान पुख्ता था कि हम समुंदर की तह पर चलते चलते दूसरे साहिल तक पहुँचेंगे। यों लिखा है,

यह ईमान का काम था कि इसराईली बहरे-कुलजुम में से यों गुज़र सके जैसे कि यह खुशक ज़मीन थी। जब मिसरियों ने यह करने की कोशिश की तो वह डूब गए। (इबरानियों 11:29)

हज़रत दाऊद भी एक ज़बूर में फ़रमाते हैं,

तुझ पर हमारे बापदादा ने भरोसा रखा, और जब भरोसा रखा तो तूने उन्हें रिहाई दी। जब उन्होंने मदद के लिए तुझे पुकारा तो बचने का रास्ता खुल गया। जब उन्होंने तुझ पर एतमाद किया तो शरमिंदा न हुए। (ज़बूर 22:4-5)

क्रौम को खुदा पर भरोसा है, और इस बिना पर वह अपनी क्रौम को बचाता है। उसका यह मोजिज़ा ज़बूर में भी बयान किया गया है,

तो भी उसने उन्हें अपने नाम की खातिर बचाया, क्योंकि वह अपनी कुदरत का इज़हार करना चाहता था। उसने बहरे-कुलजुम को झिड़का तो वह खुशक हो गया। उसने उन्हें समुंदर की गहराइयों में से यों गुज़रने दिया जिस तरह रेगिस्तान में से। उसने उन्हें नफ़रत करनेवाले के हाथ से छुड़ाया और एवज़ाना देकर दुश्मन के हाथ से रिहा किया।

(ज़बूर 106:8-10)

आइए, हम भी अल्लाह के हुज़ूर आएँ जब हम परेशानियों से घिरे रहते हैं। जब कभी हज़रत दाऊद को डर लगता तो वह खुदा के हुज़ूर आकर इल्तिजा करता और नतीजे में मदद मिलती थी।

लेकिन जब ख़ौफ़ मुझे अपनी गिरफ़्त में ले ले तो मैं तुझ पर ही भरोसा रखता हूँ। अल्लाह के कलाम पर मेरा फ़ख़ है, अल्लाह पर मेरा भरोसा है। मैं डरूँगा नहीं, क्योंकि फ़ानी इनसान मुझे क्या नुक़सान पहुँचा सकता है? (ज़बूर 56:3-4)

यसायाह नबी भी इस पर ज़ोर देता है कि हम न डरें बल्कि परेशानी के वक़्त खुदा की तरफ़ रुजू लाएँ, उसी को तकते रहें।

धड़कते हुए दिलों से कहो, “हौसला रखो, मत डरो। देखो, तुम्हारा ख़ुदा [...] तुम्हें बचाने के लिए आ रहा है।” (यसायाह 35:4)

हज़रत ईसा को भी मालूम है कि हम जो इनसान हैं हमेशा परेशान रहते हैं। इसलिए वह फ़रमाते हैं,

तुम्हारा दिल न घबराए। तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो, मुझ पर भी ईमान रखो।(यूहन्ना 14:1)

एक बार जब पौलुस रसूल को मरने का ख़तरा था तो उन्होंने बाद में लिखा,

हमने महसूस किया कि हमें सज़ाए-मौत दी गई है। लेकिन यह इसलिए हुआ ताकि हम अपने आप पर भरोसा न करें बल्कि अल्लाह पर जो मुरदों को ज़िंदा कर देता है। उसी ने हमें ऐसी हैबतनाक मौत से बचाया और वह आइंदा भी हमें बचाएगा। और हमने उस पर उम्मीद रखी है कि वह हमें एक बार फिर बचाएगा। (2 कुरिंथियों 1:9-10)

आज भी ख़ुदा चाहता है कि हम उस पर पूरा भरोसा रखें। न वह इससे ज़्यादा माँगता है न कम।

लेकिन मैं तेरी शफ़क़त पर भरोसा रखता हूँ, मेरा दिल तेरी नजात देखकर खुशी मनाएगा। मैं रब की तमजीद में गीत गाऊँगा, क्योंकि उसने मुझ पर एहसान किया है। (ज़बूर 13:5-6)

नजात पाने पर इसराईली क्रौम ने अल्लाह का शुक्र करके उसकी तमजीद की। हज़रत मूसा ने उसकी तारीफ़ में एक गीत भी लिखा।

हज़रत दाऊद अपने ज़बूरों में भी बार बार अपने खुदा की हम्दो-सना करता है।

रब की तमजीद हो,
क्योंकि उसने मेरी इल्तिजा सुन ली।
रब मेरी कुव्वत और मेरी ढाल है।
उस पर मेरे दिल ने भरोसा रखा,
उससे मुझे मदद मिली है।
मेरा दिल शादियाना बजाता है,
मैं गीत गाकर उसकी सताइश करता हूँ।
(ज़बूर 28:6-7)

- क्या इसराईली यह तमाम अज़ीम काम देखकर अब से खुदा पर भरोसा रखते और उसकी सताइश करते रहे?
 - ▶ आइए हम देखते हैं कि इसके बाद क्या हुआ।



मन और बटेरें

इसके बाद इसराईल की पूरी जमात एलीम से सफ़र करके सीन के रेगिस्तान में पहुँची [...]. रेगिस्तान में तमाम लोग फिर मूसा और हारून के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने लगे। उन्होंने कहा, “काश रब हमें मिसर में ही मार डालता! वहाँ हम कम-अज़-कम जी भरकर गोश्त और रोटी तो खा सकते थे। आप हमें सिर्फ़ इसलिए रेगिस्तान में ले आए हैं कि हम सब भूके मर जाएँ।”

तब रब ने मूसा से कहा, “मैं आसमान से तुम्हारे लिए रोटी बरसाऊँगा। हर रोज़ लोग बाहर जाकर उसी दिन की ज़रूरत के मुताबिक़ खाना जमा करें। इससे मैं उन्हें आज़माकर देखूँगा कि आया वह मेरी सुनते हैं कि नहीं। हर रोज़ वह सिर्फ़ उतना खाना जमा करें जितना कि



एक दिन के लिए काफ़ी हो। लेकिन छठे दिन जब वह खाना तैयार करेंगे तो वह अगले दिन के लिए भी काफ़ी होगा।”

मूसा और हारून ने इसराईलियों से कहा, “आज शाम को तुम जान लोगे कि रब ही तुम्हें मिसर से निकाल लाया है। और कल सुबह तुम रब का जलाल देखोगे। उसने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं, क्योंकि असल में तुम हमारे खिलाफ़ नहीं बल्कि रब के खिलाफ़ बुड़बुड़ा रहे हो। फिर भी रब तुमको शाम के वक़्त गोश्त और सुबह के वक़्त वाफ़िर रोटी देगा, क्योंकि उसने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं। तुम्हारी शिकायतें हमारे खिलाफ़ नहीं बल्कि रब के खिलाफ़ हैं।”

मूसा ने हारून से कहा, “इसराईलियों को बताना, ‘रब के सामने हाज़िर हो जाओ, क्योंकि उसने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं।’”



जब हारून पूरी जमात के सामने बात करने लगा तो लोगों ने पलटकर रेगिस्तान की तरफ देखा। वहाँ रब का जलाल बादल में ज़ाहिर हुआ। रब ने मूसा से कहा, “मैंने इसराईलियों की शिकायत सुन ली है। उन्हें बता, ‘आज जब सूरज गुरुब होने लगेगा तो तुम गोशत खाओगे और कल सुबह पेट भरकर रोटी। फिर तुम जान लोगे कि मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।’”

उसी शाम बटेरों के गोल आए जो पूरी खैमागाह पर छा गए। और अगली सुबह खैमे के चारों तरफ ओस पड़ी थी। जब ओस सूख गई तो बर्फ के गालों जैसे पतले दाने पाले की तरह ज़मीन पर पड़े थे। जब इसराईलियों ने उसे देखा तो एक दूसरे से पूछने लगे, “मन हू?” यानी “यह क्या है?” क्योंकि वह नहीं जानते थे कि यह क्या चीज़ है।



मूसा ने उनको समझाया, “यह वह रोटी है जो रब ने तुम्हें खाने के लिए दी है। रब का हुक्म है कि हर एक उतना जमा करे जितना उसके खानदान को ज़रूरत हो। अपने खानदान के हर फ़रद के लिए दो लिटर जमा करो।”

इसराईलियों ने ऐसा ही किया। बाज़ ने ज़्यादा और बाज़ ने कम जमा किया। लेकिन जब उसे नापा गया तो हर एक आदमी के लिए काफ़ी



था। जिसने ज़्यादा जमा किया था उसके पास कुछ न बचा। लेकिन जिसने कम जमा किया था उसके पास भी काफ़ी था।

इसराईलियों ने इस ख़ुराक का नाम 'मन' रखा। उसके दाने धनिये की मानिंद सफ़ेद थे, और उसका ज़ायक़ा शहद से बने केक की मानिंद था।

चटान से पानी

फिर इसराईल की पूरी जमात सीन के रेगिस्तान से निकली। रब जिस तरह हुक्म देता रहा वह एक जगह से दूसरी जगह सफ़र करते रहे। रफ़ीदीम में उन्होंने ख़ैमे लगाए।

वहाँ पीने के लिए पानी न मिला। इसलिए वह मूसा के साथ यह कहकर झगड़ने लगे, “हमें पीने के लिए पानी दो।”



मूसा ने जवाब दिया, “तुम मुझसे क्यों झगड़ रहे हो? रब को क्यों आज़मा रहे हो?”



लेकिन लोग बहुत प्यासे थे। वह मूसा के खिलाफ़ बुड़बुड़ाने से बाज़ न आए बल्कि कहा, “आप हमें मिसर से क्यों लाए हैं? क्या इसलिए कि हम अपने बच्चों और रेवड़ों समेत प्यासे मर जाएँ?”

तब मूसा ने रब के हुज़ूर फ़रियाद की, “मैं इन लोगों के साथ क्या करूँ? हालात ज़रा भी और बिगड़ जाएँ तो वह मुझे संगसार कर देंगे।”

रब ने मूसा से कहा, “कुछ बुज़ुर्ग साथ लेकर लोगों के आगे आगे चल। वह लाठी भी साथ ले जा जिससे तूने दरियाए-नील को मारा था। मैं होरिब यानी सीना पहाड़ की एक चटान पर तेरे सामने खड़ा हूँगा। लाठी से चटान को मारना तो उससे पानी निकलेगा और लोग पी सकेंगे।”



मूसा ने इसराईल के बुज़ुर्गों के सामने ऐसा ही किया। उसने उस जगह का नाम 'मस्सा और मरीबा' यानी 'आज़माना और झगड़ना' रखा, क्योंकि वहाँ इसराईली बुड़बुड़ाए और यह पूछकर रब को आज़माया कि क्या रब हमारे दरमियान है कि नहीं?

सवाल

- क्या इसराईली हमेशा खुदा पर भरोसा रखते रहे? क्या वह हर वक़्त खुदा की तरफ़ देखते रहे?
 - ▶ हरगिज़ नहीं। ज्योंही उन्हें किसी मुसीबत का सामना करना पड़ता तो उन्हें अल्लाह की मदद और अज़ीम काम याद न रहते। वह अपनी परेशानियाँ खुदा को पेश करके उसकी मदद माँगना भूल जाते थे।
- इसके बरअक्स वह क्या करते थे?
 - ▶ जब भी उन्हें दिक्क़त महसूस होती तो वह शिकायत करते और हज़रत मूसा से नाराज़ होकर उन पर इलज़ाम लगाते। उन्हें याद न रहता कि उन्हें खुदा पर भरोसा रखना और उससे इल्तिजा करना चाहिए। हज़रत मूसा ने फ़रमाया कि तुम मुझसे नहीं बल्कि अल्लाह से शिकायत कर रहे हो।
हम ज़बूर में भी यह कुछ पढ़ते हैं, कि खुदा की क़ौम कितनी बेवफ़ा रही और कि खुदा इसके बावजूद कितना वफ़ादार रहा। उसने बार बार हज़रत मूसा की सुनी जब उसे बुड़बुड़ाती क़ौम की सिफ़ारिश करनी पड़ी।

मुल्के-मिसर के इलाक़े जुअन में उसने उनके बापदादा के देखते देखते मोजिज़े किए थे। समुंदर को चीरकर उसने उन्हें उसमें से गुज़रने दिया, और दोनों तरफ़ पानी मज़बूत दीवार की तरह खड़ा रहा। दिन को उसने बादल के ज़रीए और रात-भर चमकदार आग से उनकी क्रियादत की। रेगिस्तान में उसने पत्थरों को चाक करके उन्हें समुंदर की-सी कसरत का पानी पिलाया। [...] लेकिन वह उसका गुनाह करने से बाज़ न आए बल्कि रेगिस्तान में अल्लाह तआला से सरकश रहे।

(ज़बूर 78:12-15,17)

जब हमारे बापदादा मिसर में थे तो उन्हें तेरे मोजिज़ों की समझ न आई और तेरी मुतअद्द मेहरबानियाँ याद न रहीं बल्कि वह समुंदर यानी बहरे-कुलजुम पर सरकश हुए। तो भी उसने उन्हें अपने नाम की खातिर बचाया, क्योंकि वह अपनी कुदरत का इज़हार करना चाहता था। [...] तब उन्होंने अल्लाह के फ़रमानों पर ईमान लाकर उसकी मदूहसराई की। लेकिन जल्द ही वह उसके काम भूल गए। वह उसकी मरज़ी का इंतज़ार करने के लिए तैयार

न थे। रेगिस्तान में शदीद लालच में आकर उन्होंने वहीं बयाबान में अल्लाह को आजमाया। तब उसने उनकी दरखास्त पूरी की।

(ज़बूर 106:7-8,12-15)

मालिकों के मालिक का शुक्र करो, क्योंकि उसकी शफ़क़त अबदी है। जो अकेला ही अज़ीम मोज़िज़े करता है उसका शुक्र करो, क्योंकि उसकी शफ़क़त अबदी है। [...] आसमान के ख़ुदा का शुक्र करो, क्योंकि उसकी शफ़क़त अबदी है।

(ज़बूर 136:3-4,26)

ख़ुदा ने अपनी क्रौम को मिसर की गुलामी से निकालकर छोड़ाया। वह अपनी क्रौम से मुहब्बत रखता, उसकी मदद करता और उसे सब कुछ मुहैया करता है। वह उससे रिफ़ाक़त रखना चाहता है। ताहम इसराईली अपने ख़ुदा को भूलकर गुनाह करते थे। वह यों गुनाह करते थे जिस तरह तमाम इनसान हज़रत आदम और हव्वा से लेकर आज तक करते आए हैं।

ख़ुदा चाहता है कि हम उस पर भरोसा रखें, तसलीम करें कि वह हमारा ख़ुदा और हमारा नजात देनेवाला है। वह यह भी चाहता है कि हम एक दूसरे के साथ न झगड़ें बल्कि सुलह-सलामती की ज़िंदगी गुज़ारें। इसलिए उसने हज़रत आदम और हव्वा की औलाद को अहकाम बरख़्श दिए ताकि वह उनकी मदद से उसकी मरज़ी के मुताबिक़ ज़िंदगी बसर कर सकें। इसके दस मरकज़ी अहकाम थे। इनमें से कुछ दिखाते हैं कि हमारा अल्लाह के साथ सुलूक कैसा होना चाहिए। दूसरे ज़ाहिर करते हैं कि हमारा एक दूसरे के साथ बरताव कैसा होना चाहिए। आइए हम तौरत शरीफ़ को पढ़ें।



कोहे-सीना

इसराईलियों को मिसर से सफ़र करते हुए दो महीने हो गए थे। तीसरे महीने के पहले ही दिन वह सीना के रेगिस्तान में पहुँचे। वहाँ उन्होंने रेगिस्तान में पहाड़ के करीब डेरे डाले।

तब मूसा पहाड़ पर चढ़कर अल्लाह के पास गया। अल्लाह ने पहाड़ पर से मूसा को पुकारकर कहा, “याकूब के घराने बनी इसराईल को बता, ‘तुमने देखा है कि मैंने मिसरियों के साथ क्या कुछ किया, और कि मैं तुमको उक़ाब के परोँ पर उठाकर यहाँ अपने पास लाया हूँ। चुनाँचे अगर तुम मेरी सुनो और मेरे अहद के मुताबिक़ चलो तो फिर

तमाम क्रौमों में से मेरी खास मिलकियत होगे। गो पूरी दुनिया मेरी ही है, लेकिन तुम मेरे लिए मखसूस इमामों की बादशाही और मुकद्दस क्रौम होगे।' अब जाकर यह सारी बातें इसराईलियों को बता।”

मूसा ने पहाड़ से उतरकर और क्रौम के बुजुर्गों को बुलाकर उन्हें वह तमाम बातें बताई जो कहने के लिए रब ने उसे हुक्म दिया था। जवाब में पूरी क्रौम ने मिलकर कहा, “हम रब की हर बात पूरी करेंगे जो उसने फ़रमाई है।” मूसा ने पहाड़ पर लौटकर रब को क्रौम का जवाब बताया।

जब वह पहुँचा तो रब ने मूसा से कहा, “मैं घने बादल में तेरे पास आऊँगा ताकि लोग मुझे तुझसे हमकलाम होते हुए सुनें। फिर वह हमेशा तुझ पर भरोसा रखेंगे।”

तब मूसा ने रब को वह तमाम बातें बताई जो लोगों ने की थीं। रब ने मूसा से कहा, “अब लोगों के पास लौटकर आज और कल उन्हें मेरे लिए मखसूसो-मुकद्दस कर। वह अपने लिबास धोकर तीसरे दिन के लिए तैयार हो जाँ, क्योंकि उस दिन रब लोगों के देखते देखते कोहे-सीना पर उतरेगा। लोगों की हिफ़ाज़त के लिए चारों तरफ़ पहाड़ की हदें मुक़रर कर। उन्हें ख़बरदार कर कि हुदूद को पार न करो। न पहाड़ पर चढ़ो, न उसके दामन को छुओ। जो भी उसे छुए वह ज़रूर मारा जाए।



तीसरे दिन सुबह पहाड़ पर घना बादल छा गया। बिजली चमकने लगी, बादल गरजने लगा और नरसिंगे की निहायत ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी। ख़ैमागाह में लोग लरज़ उठे। तब मूसा लोगों को अल्लाह से मिलने के लिए ख़ैमागाह से बाहर पहाड़ की तरफ़ ले गया, और वह पहाड़ के दामन में खड़े हुए। सीना पहाड़ धुएँ से ढका हुआ था, क्योंकि रब आग में उस पर उतर आया। पहाड़ से धुआँ इस तरह उठ रहा था जैसे किसी भट्टे से उठता है। पूरा पहाड़ शिद्धत से लरज़ने लगा। नरसिंगे की आवाज़ तेज़ से तेज़तर होती गई। मूसा बोलने लगा और अल्लाह उसे ऊँची आवाज़ में जवाब देता रहा।



लोग घबरा जाते हैं

जब बाक़ी तमाम लोगों ने बादल की गरज और नरसिंगे की आवाज़ सुनी और बिजली की चमक और पहाड़ से उठते हुए धुएँ को देखा तो वह ख़ौफ़ के मारे काँपने लगे और पहाड़ से दूर खड़े हो गए। उन्होंने मूसा से कहा, “आप ही हमसे बात करें तो हम सुनेंगे। लेकिन अल्लाह को हमसे बात न करने दें वरना हम मर जाएँगे।”

लेकिन मूसा ने उनसे कहा, “मत डरो, क्योंकि रब तुम्हें जाँचने के लिए आया है, ताकि उसका ख़ौफ़ तुम्हारी आँखों के सामने रहे और तुम गुनाह न करो।” लोग दूर ही रहे जबकि मूसा उस गहरी तारीकी के करीब गया जहाँ अल्लाह था।



दस अहकाम

तब अल्लाह ने यह तमाम बातें फ़रमाईं,

- “मैं रब तेरा खुदा हूँ जो तुझे मुल्के-मिसर की गुलामी से निकाल लाया। मेरे सिवा किसी और माबूद की परस्तिश न करना।

- अपने लिए बुत न बनाना। किसी भी चीज़ की मूरत न बनाना, चाहे वह आसमान में, ज़मीन पर या समुंदर में हो। न बुतों की परस्तिश, न उनकी खिदमत करना, क्योंकि मैं तेरा रब ग़यूर ख़ुदा हूँ। जो मुझसे नफ़रत करते हैं उन्हें मैं तीसरी और चौथी पुशत तक सज़ा दूँगा। लेकिन जो मुझसे मुहब्बत रखते और मेरे अहकाम पूरे करते हैं उन पर मैं हज़ार पुशतों तक मेहरबानी करूँगा।
- रब अपने ख़ुदा का नाम बेमक़सद या ग़लत मक़सद के लिए इस्तेमाल न करना। जो भी ऐसा करता है उसे रब सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ेगा।
- सबत के दिन का ख़याल रखना। उसे इस तरह मनाना कि वह मख़सूसो-मुक़द्दस हो। हफ़ते के पहले छः दिन अपना काम-काज कर, लेकिन सातवाँ दिन रब तेरे ख़ुदा का आराम का दिन है। उस दिन किसी तरह का काम न करना। न तू, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा नौकर, न तेरी नौकरानी और न तेरे मवेशी। जो परदेसी तेरे दरमियान रहता है वह भी काम न करे। क्योंकि रब ने पहले छः दिन में आसमानो-ज़मीन, समुंदर और जो कुछ उनमें है बनाया लेकिन सातवें दिन आराम किया। इसलिए रब ने सबत के दिन को बरकत देकर मुक़र्रर किया कि वह मख़सूस और मुक़द्दस हो।

- अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना। फिर तू उस मुल्क में जो रब तेरा खुदा तुझे देनेवाला है देर तक जीता रहेगा।
- क़त्ल न करना।
- ज़िना न करना।
- चोरी न करना।
- अपने पड़ोसी के बारे में झूठी गवाही न देना।
- अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना। न उसकी बीवी का, न उसके नौकर का, न उसकी नौकरानी का, न उसके बैल और न उसके गधे का बल्कि उसकी किसी भी चीज़ का लालच न करना।”

तब रब ने मूसा से कहा, “इसराईलियों को बता, ‘तुमने खुद देखा कि मैंने आसमान पर से तुम्हारे साथ बातें की हैं। चुनाँचे मेरी परस्तिश के साथ साथ अपने लिए सोने या चाँदी के बुत न बनाओ। मेरे लिए मिट्टी की कुरबानगाह बनाकर उस पर अपनी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों की भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ चढ़ाना। मैं तुझे वह जगहें दिखाऊँगा जहाँ मेरे नाम की ताज़ीम में कुरबानियाँ पेश करनी हैं। ऐसी तमाम जगहों पर मैं तेरे पास आकर तुझे बरकत दूँगा। [...] जो भी हिदायत मैंने दी है उस पर अमल कर।

सवाल

अब क्रौम को खुदा का तजरिबा हुआ था, और उन्हें उन अहकाम की समझ आई जो अल्लाह ने दिया था।

- क्या वह अब से इन अहकाम के तहत रहे?
- क्या अब से इसराईलियों को खुदा और उसकी बातें याद रहीं?
- क्या वह अब से गुनाह करने से बाज़ रहे?
- क्या वह अब से यों ज़िंदगी गुज़ारने लगे कि खुदा उनसे रिफ़ाक़त रख सके?
- आपका क्या ख़याल है?

जो मज़ीद तफ़सील से हज़रत मूसा के बारे में पढ़ना चाहता है वह तौरैत में ख़ुरूज 13 से लेकर 20 तक पढ़े।